Get More Files for State TET and CTET Exam from 9460443210 by whatsapp.

अध्याय 1

बाल विकास

1.1 प्रस्तावना

बाल्यकाल मानव जीवन की अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अवस्था है। यह विकास काल भावी जीवन की आधारशिला प्रस्तुत करता है। अतः सभी मनोवैज्ञानिकों, शिक्षाशास्त्रियों तथा दार्शनिकों ने इस अवस्था के महत्त्व को स्वीकार करते हुए इस बात पर जोर दिया है कि इस आयु में बालक का पालन–पोषण और शिक्षण इस प्रकार किया जाये कि वह समाज, समुदाय तथा राष्ट्र के उत्तम नागरिक के रूप में विकसित हो सके।

फ्रायड के अनुसार–

प्राणी चार, पाँच साल की उम्र में जो कुछ बनना होता है बन जाता है।

अतः फ्रायड के अनुसार भी जीवन की प्रारम्भिक अवस्था महत्त्वपूर्ण अवस्था है।

कुछ समय पूर्व तक समाज की यह धारणा थी कि मानव शिशु शारीरिक रूप से प्रौढ़ों के समान ही होता है, जो कि विकास क्रम में धीरे–धीरे प्रौढों के रूप में परिवर्तित हो जाता है। व्यक्तियों की इसी धारणा के कारण बाल विकास तथा बाल मन के अध्ययन की आवश्यकता है। दार्शनिकों के प्रयासों से धीरे–धीरे बाल अध्ययन और बाल विकास के महत्त्व को समझा जाने लगा, जिसके फलस्वरूप बाल मन तथा बाल विकास के अध्ययन के लिए स्वतन्त्र रूप से अलग–अलग शाखाओं का आविर्भाव हुआ, जिन्हें **बाल मनोविज्ञान** तथा **विकासात्मक मनोविज्ञान** के नाम से जाना गया।

1.2 बाल मनोविज्ञान

बाल मनोविज्ञान दो शब्दों से मिलकर बना है– **बाल** + **मनोविज्ञान**। **बाल** का अर्थ है बालक अर्थात् वह प्राणी जो प्रौढ़ की श्रेणी में नहीं आया है, उसे बालक की श्रेणी में रखा जाता है। हम यह भी कह सकते हैं गर्भावस्था से लेकर किशोरावस्था तक की आयु के बच्चों को बालकों की श्रेणी में रखा जाता है। **मनोविज्ञान** से अभिप्राय मन के विज्ञान से है। अतः बाल मनोविज्ञान से तात्पर्य विज्ञान की उस शाखा से है, जो बालकों के मन (व्यवहारों) का अध्ययन गर्भावस्था से लेकर किशोरावस्था तक करती है।

बाल मनोविज्ञान के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने अनेक परिभाषाएँ दी है, उनमें से कुछ परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं–

For Key/Answer of this file Send Your PINCODE to 9460443210 by whatsapp.

Get More Files for State TET and CTET Exam from 9460443210 by whatsapp.

1. क्रो और क्रो के अनुसार–

बाल मनोविज्ञान, वह वैज्ञानिक अध्ययन है, जो व्यक्ति के विकास का अध्ययन गर्भकाल की प्रारम्भिक अवस्था से किशोरावस्था तक करता है।

2. जेम्स ड्रेवर के अनुसार–

बाल मनोविज्ञान मनोविज्ञान की वह शाखा है, जो प्राणी के विकास का अध्ययन जन्म से परिपक्वास्था तक करती है।

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि बाल मनोविज्ञान बालकों के विकास और व्यवहार के सभी पक्षों का अध्ययन गर्भावस्था से किशोरावस्था तक वैज्ञानिक तरीकों से करता है, क्योंकि प्राणी का जीवन जन्म से नहीं अपितु गर्भाधान के समय से ही प्रारम्भ होता है। अतः बाल मनोविज्ञान इसी विकास का अध्ययन गर्भावस्था से किशोरावस्था तक करता है।

1.3 विकासात्मक मनोविज्ञान

साधारणतया बाल मनोविज्ञान और विकासात्मक मनोविज्ञान को एक ही अर्थ में लिया जाता है, किन्तु दोनों में पर्याप्त अन्तर है। **बाल मनोविज्ञान** बालक के विकास का अध्ययन केवल किशोरावस्था तक ही करता है जबकि **विकासात्मक मनोविज्ञान** अत्यन्त ही विस्तृत और व्यापक है। यह प्राणी के विकास का अध्ययन जन्म पूर्व से लेकर जीवन पर्यन्त करता है। विकास एक क्रमिक प्रक्रिया है, जो जीवन–पर्यन्त किसी न किसी रूप में चलती रहती है।

विकास क्रम में होने वाले परिवर्तन समान नहीं होते हैं। जीवन की प्रारम्भिक अवस्था में रचनात्मक परिवर्तन होते हैं, क्योंकि जीवन के पूर्वार्द्ध में वृद्धि तीव्र गति से होती है। जीवन के उत्तरार्द्ध में विनाशात्मक परिवर्तन होता है। रचनात्मक परिवर्तन प्राणी में परिपक्वता लाते हैं और विनाशात्मक परिवर्तन प्राणी को वृद्धावस्था की ओर ले जाते हैं। जीवन के उत्तरार्द्ध में विनाशात्मक परिवर्तन होते हैं। बाल मनोविज्ञान केवल बाल्यकाल में होने वाले रचनात्मक परिवर्तनों का ही अध्ययन करता है, जबकि विकासात्मक मनोविज्ञान एक व्यापक प्रत्यय है, जो प्राणी के विकास की विभिन्न शारीरिक और मानसिक दशाओं तथा परिवर्तनों का अध्ययन गर्भाधान से लेकर वृद्धावस्था तक करता है।

For Key/Answer of this file Send Your PINCODE to 9460443210 by whatsapp.

Get More Files for State TET and CTET Exam from 9460443210 by whatsapp.

1.4 बाल मनोविज्ञान एवं विकासात्मक मनोविज्ञान में अन्तर

यद्यपि विकासात्मक मनोविज्ञान बाल मनोविज्ञान की ही एक शाखा है, किन्तु दोनों के उद्देश्य, कार्य क्षेत्र और दृष्टिकोण में पर्याप्त अन्तर है। इस अन्तर को निम्न आधार पर समझा जा सकता है–

1. क्षेत्र में अन्तर

विकासात्मक मनोविज्ञान का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक व विस्तृत है। यह बाल मनोविज्ञान का विस्तार है, क्योंकि यह प्राणी के विकास का अध्ययन जन्म पूर्व से लेकर वृद्धावस्था तक करता है। यह सम्पूर्ण जीव के विकास से सम्बन्धित है। इसके विपरीत बाल मनोविज्ञान का क्षेत्र केवल किशोरावस्था तक ही सीमित है। विकासात्मक मनोविज्ञान के क्षेत्र की व्यापकता इस बात से भी ज्ञात होती है कि विकासात्मक मनोविज्ञान प्राणी के विकास क्रम में होने वाले रचनात्मक तथा विनाशात्मक दोनों प्रकार के परिवर्तनों का अध्ययन करता है, जबकि बाल मनोविज्ञान केवल बालकों के रचनात्मक परिवर्तनों का ही अध्ययन करता है।

2. उद्देश्य में अन्तर

बाल मनोविज्ञान का मुख्य उद्देश्य बालक के मन और व्यवहारों को समझना है। इस प्रकार के अध्ययन से शैक्षिक निर्देशन में सहायता मिलती है। इसके विपरीत विकासात्मक मनोविज्ञान का उद्देश्य बालक के भूत और भविष्य को उनके वर्तमान से जोड़ना है। इस कारण विकासात्मक मनोविज्ञान विकास की सभी अवस्थाओं का अध्ययन करता है। इसका प्रमुख उद्देश्य प्राणी की क्षमताओं के विकास की दिशा व गति निर्धारित करना है।

3. दृष्टिकोण में अन्तर

बाल मनोविज्ञान बालक की क्षमताओं का अध्ययन करता है। वह यह जानने का प्रयास करता है कि बालक के अन्दर कौन–कौनसी क्षमताएँ विद्यमान हैं। उनके व्यवहार प्रौढ़ों से किस प्रकार भिन्न हैं। विकासात्मक मनोविज्ञान बालक की क्षमताओं के विकास के अध्ययन पर बल देता है, जिसके आधार पर आज के बालक को कल के लिए प्रौढ़ता प्राप्त हो सके।

इस प्रकार उपर्युक्त विवरण से बाल मनोविज्ञान तथा विकासात्मक मनोविज्ञान में पर्याप्त अन्तर दिखायी देता है।

For Key/Answer of this file Send Your PINCODE to 9460443210 by whatsapp.

Get More Files for State TET and CTET Exam from 9460443210 by whatsapp.

1.5 बाल विकास का अर्थ

बाल विकास से तात्पर्य बालकों के सर्वांगीण विकास से है। बाल विकास का अध्ययन करने के लिए **विकासात्मक मनोविज्ञान** की एक अलग शाखा बनाई गयी जो बालकों के व्यवहारों का अध्ययन गर्भावस्था से लेकर मृत्युपर्यन्त करती है, परन्तु वर्तमान समय में इसे **बाल विकास** में परिवर्तित कर दिया गया, क्योंकि बाल मनोविज्ञान में केवल बालकों के व्यवहारों का अध्ययन किया जाता है, जबकि बाल विकास के अन्तर्गत उन सभी तथ्यों का अध्ययन किया जाता है, जो बालकों के व्यवहारों को एक निर्धारित दिशा प्रदान कर विकास में सहायता प्रदान करते हैं। हरलॉक ने इस सम्बन्ध में कहा है कि–

> बाल मनोविज्ञान का नाम बाल विकास इसलिए बदला गया, क्योंकि अब बालक के विकास के समस्त पहलुओं पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है, किसी एक पक्ष पर नहीं।

1.6 बाल विकास की परिभाषाएँ

बाल विकास के सम्बन्ध में अनेक विद्वानों ने अलग–अलग परिभाषाएँ दी हैं–

1. क्रो एण्ड क्रो के अनुसार–

> बाल विकास वह विज्ञान है, जो बालक के व्यवहार का अध्ययन गर्भावस्था से मृत्युपर्यन्त तक करता है।

2. डार्विन के अनुसार–

> बाल विकास व्यवहारों का वह विज्ञान है, जो बालक के व्यवहार का अध्ययन गर्भावस्था से मृत्युपर्यन्त तक करता है।

3. हरलॉक के अनुसार–

> बाल विकास मनोविज्ञान की वह शाखा है, जो गर्भाधान से लेकर मृत्युपर्यन्त होने वाले मनुष्य के विकास की विभिन्न अवस्थाओं में हाने वाले परिवर्तनों का अध्ययन करता है।

इस प्रकार उपर्युक्त परिभाषाओं से यह स्पष्ट होता है कि बाल विकास बाल मनोविज्ञान की ही एक शाखा है, जो बालकों के विकास, व्यवहार, विकास को प्रभावित करने वाले विभिन्न तत्त्वों का अध्ययन करती है।

For Key/Answer of this file Send Your PINCODE to 9460443210 by whatsapp.

Get More Files for State TET and CTET Exam from 9460443210 by whatsapp.

1.7 बाल विकास के क्षेत्र

बाल विकास का क्षेत्र अत्यन्त ही विस्तृत और व्यापक है। यह बालक के विकास के सभी आयामों, स्वरूपों, असामान्यताओं, शारीरिक व मानसिक परिवर्तनों तथा उनको प्रभावित करने वाले तत्त्वों, जैसे– परिपक्वता और शिक्षण, वंशानुक्रम और वातावरण आदि सभी का अध्ययन करता है। बाल विकास के क्षेत्र के अन्तर्गत निम्नलिखित बातों को सम्मिलित किया जाता है–

1. बाल विकास की विभिन्न अवस्थाओं का अध्ययन

प्राणी के जीवन प्रसार में अनेक अवस्थाएँ होती हैं। जैसे– गर्भकालीन अवस्था, शैशवावस्था, बचपनावस्था, बाल्यावस्था, वय संधि और किशोरावस्था। बाल विकास केवल बाल्यावस्था का ही अध्ययन नहीं करता अपितु विकास क्रम की सभी अवस्थाओं के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक, बौद्धिक आदि सभी पहलुओं का अध्ययन करता है।

विकास क्रम की प्रत्येक अवस्था अपनी एक अलग विशेषता रखती है। प्रत्येक अवस्था में पहुँचने पर बालक की शारीरिक व मानसिक क्रियाओं का स्वरूप बदल जाता है, क्योंकि नित नयी परिस्थितियों के साथ समायोजन करने के लिए बालक अपने व्यवहार प्रतिमानों में परिवर्तन कर लेता है।

2. बाल विकास के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन

बाल विकास बालक के किसी एक ही क्षेत्र से सम्बन्धित नहीं होता है। इसके अन्तर्गत विकास के विभिन्न पहलुओंः जैसे– शारीरिक विकास, मानसिक विकास, संवेगात्मक विकास, सामाजिक विकास, क्रियात्मक विकास, भाषा विकास, नैतिक विकास, चारित्रिक विकास और व्यक्तित्व विकास सभी का विस्तारपूर्वक अध्ययन किया जाता है।

3. बाल विकास को प्रभावित करने वाले तत्त्वों का अध्ययन

बाल विकास उन सभी तत्त्वों का अध्ययन करता है, जो बालक के विकास को प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। बालक के विकास पर प्रमुख रूप से वंश परम्परा और वातावरण तथा परिपक्वता और शिक्षण का प्रभाव पड़ता है। बाल विकास की प्रक्रिया में इन तत्त्वों के कारण बालक का व्यक्तित्व एक विशेष रूप ग्रहण करता है। वंश परम्परा बालकों को गर्भाधान के समय ही उनके माता–पिता तथा पूर्वजों के विभिन्न शारीरिक व मानसिक गुण, योग्यताएँ व क्षमताएँ प्रदान कर देती है, जिनका प्रभाव जन्म के बाद आजीवन बालक के विकास के विभिन्न पहलुओं पर पड़ता है। जन्म के बाद जो तत्त्व बालक के विकास को प्रभावित करते हैं, वे सभी वातावरणीय होते हैं। वातावरणीय तत्त्व भी प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से निरन्तर बालक के विकास को विभिन्न रूपों में प्रभावित करते रहते हैं।

For Key/Answer of this file Send Your PINCODE to 9460443210 by whatsapp.

Get More Files for State TET and CTET Exam from 9460443210 by whatsapp.

परिपक्वता और शिक्षण भी बाल विकास पर अपना अत्यधिक प्रभाव डालते हैं। परिपक्वता आन्तरिक होती है और शिक्षण बाह्य वातावरण से प्राप्त होता है। बालक के समुचित विकास के लिए दोनों का होना आवश्यक होता है। इस प्रकार बाल विकास बालकों के विकास का अध्ययन करते समय विकास को प्रभावित करने वाले सभी तत्त्वों का भी अध्ययन करता है।

4. बालकों की विभिन्न असामान्यताओं का अध्ययन

बाल विकास के अन्तर्गत केवल सामान्य बालकों के विकास का ही अध्ययन नहीं किया जाता, बल्कि बालकों के जीवन विकास क्रम में होने वाली असामान्यताओं और विकृतियों का भी अध्ययन किया जाता है। बाल विकास, असन्तुलित व्यवहारों, मानसिक विकारों, बौद्धिक दुर्बलताओं तथा बाल अपराधों के कारणों को जानने का प्रयास करता है और निराकरण हेतु उपाय भी बताता है।

5. मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान का अध्ययन

बाल विकास केवल मानसिक दुर्बलताओं और रोगों का ही अध्ययन नहीं करता, बल्कि विभिन्न मनोवैज्ञानिक तरीकों से उनके उपचार भी प्रस्तुत करता है। मनोचिकित्सा बाल मनोविज्ञान और बाल विकास की ही देन है।

6. बाल व्यवहारों और अन्तः क्रियाओं का अध्ययन

मनुष्य गतिशील व सामाजिक प्राणी है। विभिन्न आयु स्तरों पर वह अपने समायोजन के लिए अपने सम्पर्क में आने वाले व्यक्तियों, जैसे–परिवार के लोग, पड़ोसी, अध्यापक, खेल के साथी और समाज में सभी परिचितों के साथ अन्तः क्रियाएँ करता रहता है। बाल विकास, विकास की विभिन्न अवस्थाओं में होने वाली बालक की विभिन्न अन्तः क्रियाओं का अध्ययन कर यह जानने का प्रयास करता है कि ये क्रियाएँ कौन–सी हैं और इनसे बालकों के व्यवहार में क्या परिवर्तन होते हैं, ये परिवर्तन समायोजन में सहायक है या बाधक। बालक के समुचित विकास तथा समायोजन के लिए ये अन्तः क्रियाएँ आवश्यक हैं।

7. बालकों की रूचियों का अध्ययन

बाल विकास बालकों की रूचियों का अध्ययन कर उन्हें शैक्षिक और व्यावसायिक निर्देशन प्रदान करता है। रूचियाँ एक अर्जित व्यवहार है, जो जन्मजात नहीं होती है, बल्कि सीखी जाती है। रूचियाँ कार्य करती हैं और लक्ष्य की पूर्ति को आसान बनाती हैं। यदि बालक को किसी कार्य में रूचि होती है, तो वह उसे शीघ्रता से अधिक मनोयोग के साथ पूरा कर लेता है।

8. बालकों की विभिन्न मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन

बाल विकास बालकों के बौद्धिक विकास की विभिन्न मानसिक प्रक्रियाओं, जैसे–

For Key/Answer of this file Send Your PINCODE to 9460443210 by whatsapp.

Get More Files for State TET and CTET Exam from 9460443210 by whatsapp.
अधिगम, कल्पना, चिन्तन, तर्क, स्मृति तथा प्रत्यक्षीकरण आदि का अध्ययन करता है। बाल विकास यह जानने का प्रयास करता है कि विभिन्न आयु स्तरों में ये मानसिक प्रक्रियाएँ किस रूप में पायी जाती हैं और उनके विकास की गति क्या होती है। इसी के आधार पर मानसिक प्रक्रियाओं का विकास किया जाता है।

9. बालकों की वैयक्तिक विभिन्नताओं का अध्ययन

यद्यपि सभी आयु स्तरों पर विकास का एक निश्चित प्रतिरूप होता है, लेकिन फिर भी प्रत्येक क्षेत्र में सभी बालकों का विकास का एक निश्चित प्रतिरूप होता है। शारीरिक विकास में कुछ बालक अधिक लम्बे, कुछ नाटे तथा कुछ सामान्य लम्बाई के होते हैं। इसी प्रकार मानसिक विकास में भी कुछ प्रतिभाशाली, कुछ सामान्य और कुछ मन्द बुद्धि होते हैं। इसी प्रकार कुछ बालक सामाजिक तथा बहिर्मुखी होते हैं, जबकि कुछ अन्तर्मुखी। अतः विकास के सभी क्षेत्रों में व्यक्तिगत भिन्नता पायी जाती है।

10. बालकों के व्यक्तित्व का मूल्यांकन

बाल विकास के अन्तर्गत बालकों की विभिन्न शारीरिक और मानसिक योग्यताओं का मापन व मूल्यांकन किया जाता है। योग्यताओं के मापन व मूल्यांकन के लिए बाल विकास के क्षेत्र में मनोवैज्ञानिकों द्वारा नित नये वैज्ञानिक तथा प्रमापीकृत परीक्षणों का निर्माण किया जाता है। ये परीक्षण विभिन्न आयु स्तरों पर बालकों की योग्यताओं का मापन कर उनके व्यक्तित्व का मूल्यांकन करते हैं।

11. बालक–अभिभावक सम्बन्धों का अध्ययन

जन्म के पश्चात् सबसे पहले बालक को अपने माता–पिता का संरक्षण प्राप्त होता है। बालक के व्यक्तित्व निर्धारण और समुचित विकास में माता–पिता का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। जिन बालकों के सम्बन्ध अपने माता–पिता के साथ अच्छे नहीं होते हैं, वे अक्सर कुसमायोजित और अपराधी प्रवृत्ति के हो जाते हैं। बाल विकास, बालक–अभिभावक सम्बन्धों के निर्धारक तत्त्वों तथा समस्याओं और उनके निराकरण का अध्ययन कर माता–पिता तथा बालकों के बीच अच्छे सम्बन्ध विकसित करने का प्रयास करता है, जिससे बालक परिवार, समाज व राष्ट्र के अच्छे नागरिक के रूप में विकसित हो सकें।

1.8 बाल विकास के अध्ययन का महत्त्व

वर्तमान समय में बाल विकास भी अन्य सामाजिक विज्ञानों की तरह एक स्वतन्त्र विज्ञान है। इसका अध्ययन सम्पूर्ण मानव विकास की इकाई माना जाता है, इसलिए क्रो एण्ड क्रो ने कहा कि–

For Key/Answer of this file Send Your PINCODE to 9460443210 by whatsapp.

Get More Files for State TET and CTET Exam from 9460443210 by whatsapp.

व्यक्ति तथा समाज के कल्याण के क्षेत्र में रूचि रखने वाले मनोवैज्ञानिक, शिक्षक, अभिभावक, सामाजिक कार्यकर्ता बालकों के अध्ययन को महत्त्व देने लगे हैं। बालक व्यक्ति का पिता है बालक के प्रथम छः वर्ष महत्त्वपूर्ण होते हैं, आदि लोकोक्तियों ने बाल विकास के अध्ययन के महत्त्व को बढ़ाया ही है।

इस प्रकार बाल विकास का अध्ययन सभी के लिए उपयोगी है। बालक किसी भी समाज व राष्ट्र की आधारशिला है। उनका स्वस्थ विकास समाज व राष्ट्र की प्रगति में योगदान देता है। माता–पिता भी बाल अध्ययन के द्वारा अपने बच्चे को समाज के अच्छे नागरिक के रूप में विकसित कर सकते हैं। उसकी प्रतिभाओं को जानकर उसकी शिक्षा की उचित व्यवस्था कर सकते हैं।

बाल विकास का अध्ययन माता–पिता तथा अन्य लोगों के लिए निम्न रूपों में लाभकारी हो सकता है–

1. विकासात्मक क्रियाओं का ज्ञान प्राप्त होना

विकास की प्रक्रिया के दौरान प्रत्येक बालक किसी विशिष्ट आयु में कुछ विशिष्ट गुण प्रदर्शित करता है, जो उससे पूर्व या बाद की अवस्थाओं में या तो होते ही नहीं हैं या यदि होते भी हैं, तो सामान्य होते हैं विशिष्ट नहीं। इन्हीं **विशिष्ट गुणों** को विकासात्मक क्रियाएँ कहा जाता है। इन विकासात्मक क्रियाओं के आधार पर बालक के विकास की भविष्यवाणी की जा सकती है और विकासात्मक क्रियाओं के अनुसार उन गुणों को विकसित करने के लिए साधन व सुविधाएँ प्रदान की जा सकती हैं। जैसे– जन्म के बाद 1–12 माह की आयु में बालक चलने की क्रियाएँ करने लगता है, 3–4 माह में भाषा विकास होने लगता है आदि सभी क्रियाएँ अवस्था विशेष की विकासात्मक क्रियाएँ हैं।

2. बाल पोषण विधियों का ज्ञान

बाल विकास के अध्ययन से माता–पिता तथा अभिभावकों को बाल पोषण विधियों का ज्ञान प्राप्त हो जाता है। प्रत्येक माता–पिता प्रथम शिशु के जन्म के समय बाल पोषण के ज्ञान से अनभिज्ञ होते हैं, लेकिन बाल विकास का अध्ययन माता–पिता को मातृत्व तथा पितृत्व के दायित्व जैसे गम्भीर प्रश्नों को हल करके बाल पोषण को सहज बनाता है।

3. व्यक्ति विभिन्नताओं की जानकारी प्राप्त होना

यद्यपि विकास का एक निश्चित प्रतिमान होता है और प्रत्येक विकासावस्था की अपनी कुछ प्रमुख विशेषताएँ होती हैं फिर भी जन्म के बाद दो बालकों के विकास में समानता नहीं पायी जाती है, जैसे– एक बालक कुशाग्र बुद्धि होता है, जबकि दूसरा सामान्य बुद्धि। बाल विकास के अध्ययन से व्यक्तिगत विभिन्नताओं का पता चलता है, जिससे बालकों के शिक्षा निर्देशन में सहायता मिलती है।

For Key/Answer of this file Send Your PINCODE to 9460443210 by whatsapp.

Get More Files for State TET and CTET Exam from 9460443210 by whatsapp.

4. विकास की अवस्थाओं का ज्ञान

बाल विकास का अध्ययन माता–पिता को यह जानकारी प्रदान करता है कि गर्भवस्था से लेकर बालक प्रौढ़ावस्था तक किस प्रकार विकसित होता है। जीवन की विभिन्न अवस्थाओं में विकास के विभिन्न पहलुओं में कौन–कौन से परिवर्तन होंगे। विकास की अवस्था की जानकारी प्राप्त कर माता–पिता बालकों के समुचित विकास में अपना योगदान दे सकते हैं।

5. बालकों के प्रशिक्षण तथा शिक्षा में उपयोगी

बाल विकास के अध्ययन से यह जानकारी मिलती है कि किस अवस्था में बालक कितनी मानसिक योग्यता रखता है। बच्चे की मानसिक योग्यता और बुद्धि के अनुसार ही उसके प्रशिक्षण तथा शिक्षा की व्यवस्था की जाती है तथा विभिन्न कक्षाओं में उसकी योग्यतानुसार ही पाठ्यक्रम तैयार किया जाता है।

6. बालकों के व्यक्तित्व निर्माण में सहायक

बाल विकास का अध्ययन बाल विकास के विभिन्न पहलुओं की जानकारी प्रदान करता है, जिससे माता–पिता, अभिभावकों तथा शिक्षकों को यह जानकारी प्राप्त होती है कि बालक के व्यक्तित्व निर्माण में कौन–से तत्त्व सहायक हैं और कौन–से बाधक। कौन–से तत्त्व व्यक्तित्व विकास के लिए परम आवश्यक हैं और कौन–से बाधक। आदि बातें बाल विकास के अध्ययन से ही ज्ञात होती हैं, जिन्हें जानकर बालकों के व्यक्तित्व विकास में सहायता प्राप्त होती है।

7. बालकों के व्यवहारों को नियन्त्रित करने में सहायक

बाल विकास का प्रमुख उद्देश्य बालकों का समुचित विकास कर उन्हें समाज व देश के अच्छे नागरिक के रूप में विकसित करना है। किसी भी बालक को समाज तभी स्वीकार करता है, जबकि उसका शारीरिक व मानसिक रूप से व्यवहार सामान्य हो। बाल विकास का अध्ययन माता–पिता तथा शिक्षकों को इस बात के लिए प्रेरित करता है कि वह प्रारम्भ से ही बालकों को इस प्रकार का निर्देशन दे कि प्रत्येक क्षेत्र में उनका व्यवहार नियन्त्रित व सामान्य हो।

8. बालकों के स्वभाव को समझने में सहायक

विकास की विभिन्न अवस्थाओं में सभी बालकों के स्वभाव में परिवर्तन होता रहता है। कुछ बालकों का विकास तीव्र गति से होता है वह अपने प्रत्येक वातावरण के साथ आसानी से समायोजन कर सकते हैं, जबकि अन्तर्मुखी बालकों को यदि उचित निर्देशन प्राप्त नहीं होता है तो उनका विकास कुंठित हो जाता है, क्योंकि वह अपनी आवश्यकताओं को महसूस तो करते हैं, लेकिन उनका प्रकटीकरण नहीं कर पाते हैं। बाल विकास का अध्ययन ऐसे बालकों के स्वभाव को समझने तथा उन्हें उचित निर्देशन

For Key/Answer of this file Send Your PINCODE to 9460443210 by whatsapp.

Get More Files for State TET and CTET Exam from 9460443210 by whatsapp.
देकर उनके विकास में सहायता प्रदान करता है।

9. बालक के विकास के सम्बन्ध में पूर्वानुमान

कहावत है कि **पूत के पाँव पालने में ही दिखायी देते हैं।** बाल विकास का ज्ञान इस कहावत की पुष्टि करता है। बाल विकास और बाल व्यवहार के अध्ययन द्वारा बच्चे के भावी विकास के अध्ययन में भविष्यवाणी की जा सकती है। यदि किसी बालक का विकास आयु के विभिन्न स्तरों पर तीव्र गति से होता है, तो कहा जा सकता है कि बालक प्रतिभाशाली होगा, इसी प्रकार यदि सामान्य ढंग से होता है, तो कहा जा सकता है कि बालक सामान्य होगा। यदि मन्द गति से होगा तो बालक मन्द बुद्धि होगा।

10. परिवार या समाज की सुख–समृद्धि में सहायक

बाल विकास का अध्ययन केवल बालकों का ही सर्वांगीण विकास नहीं करता अपितु बालकों के उचित विकास द्वारा परिवार व समाज की शान्ति तथा सुख समृद्धि में सहायता प्रदान करता है, क्योंकि आज का बालक ही भविष्य का पिता तथा राष्ट्र निर्माता है। बालक का मन एक कच्ची मिट्टी के घड़े के समान है।

अतः यह कहा जा सकता है कि अध्यापक व अभिभावक में बच्चों की सफलता के लिये उन्हें विकास के बारे में पता होना चाहिए, जिससे यह ज्ञात हो सके कि बालक कैसे विकसित हो रहा है। यदि इसका प्रयोग नहीं होता, तो बालक का विकास ही बालक की प्रगति में बाधक होता है। यहाँ यह कहा जा सकता है कि अध्यापक व अभिभावकों को बालक के विकास की दिशा का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए।

1.9 बाल विकास के सम्बन्ध मे प्रचलित भ्रान्तियाँ और परम्परागत विश्वास

यद्यपि 20वीं शताब्दी में बाल–विकास विषय का अत्यधिक विकास हुआ है फिर भी वर्तमान समय में बालकों और उनके विकास के सम्बन्ध में कुछ ऐसी भ्रान्तियाँ और परम्परागत विश्वास हैं, जो बालकों को प्रभावित करते हैं। ये भ्रान्तियाँ केवल ग्रामीण और अनपढ़ लोगों में ही नहीं हैं, बल्कि शहरी और पढ़े–लिखे माता–पिता और अभिभावकों में भी हैं। इन भ्रान्तियों के कारण माता–पिता की पालन–पोषण विधियाँ बालक के विकास के लिए उपयुक्त हैं। प्रमुख परम्परागत विश्वास निम्नलिखित हैं–

1. बाल्यावस्था के सम्बन्ध में

माता–पिता में बालकों के सम्बन्ध में प्रमुख भ्रान्ति यह है कि–

बालक प्रौढ़ व्यक्ति का ही लघुरूप है।

इस भ्रान्ति के कारण माता–पिता अपने बालकों से यह उम्मीद करते हैं कि वे

For Key/Answer of this file Send Your PINCODE to 9460443210 by whatsapp.

Get More Files for State TET and CTET Exam from 9460443210 by whatsapp.
बाल्यावस्था में ही वयस्कों के समान सभी व्यवहार करने लगें। यदि वे करने में असमर्थ रहते हैं, तो उन्हें दण्ड दिया जाता है, आलोचना की जाती है तथा तिरस्कार किया जाता है। इससे बाल मन पर बुरा प्रभाव पड़ता है, वे हीन भावना का शिकार हो जाते हैं और आत्मविश्वास खो देते हैं, जिससे उनका व्यक्तित्व विकास अवरूद्ध हो जाता है।

मनोवैज्ञानिकों ने इस विश्वास का खण्डन किया है। उनके अनुसार, **बालक ही प्रौढ़ बनता है,** किन्तु बाल्यावस्था में वह प्रौढ़ों के समान परिपक्व नहीं होता है।

2. बालकों के जन्म के सम्बन्ध में

बालकों के जन्म के सम्बन्ध में भी कुछ धारणाएँ प्रमुख हैं, जैसे– कुछ लोग मानते हैं कि शुभ नक्षत्र में पैदा होने वाला बच्चा भाग्यशाली होता है और उसका जीवन स्वयं के लिए तथा परिवार के लिए मंगलकारी होता है। इसी प्रकार जो बच्चा अशुभ नक्षत्र में पैदा होता है वह अमंगलकारी होता है तथा उसका जीवन परिवार तथा स्वयं के लिए कष्टप्रद होता है। इसी प्रकार सप्ताह के विभिन्न दिनों में जन्म लेने के सम्बन्ध में भी अलग–अलग अवधारणाएँ और परम्परागत विश्वास हैं। इसी प्रकार यदि किसी बालक के जन्म के समय तथा जन्म के बाद परिवार में कोई शुभ कार्य होता है और परिवार की प्रगति व समृद्धि होती है, तो उस बालक को भाग्यशाली मानकर उसे अन्य बालकों की तुलना में अधिक लाड़–प्यार दिया जाता है।

मनोवैज्ञानिकों तथा बाल विशेषज्ञों के मतानुसार यह धारणा भी निराधार है। ज्योतिष के अनुसार नक्षत्र व घड़ियाँ जीवन को प्रभावित अवश्य करती हैं, किन्तु जन्म से ही किसी शिशु को मंगलकारी या अमंगलकारी नहीं बनाती हैं। प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री मैडम मारिया मॉण्टेसरी के अनुसार–

> बालक में सच्ची शक्ति का आवास होता है तथा उसकी मुस्कुराहट ही सामाजिक प्रेम व उल्लास की आधारशिला है।

3. वंशानुक्रम के सम्बन्ध में

वंशानुक्रम के सम्बन्ध में एक प्रचलित अवधारणा यह है कि जैसे माता–पिता होते हैं, वैसी ही सन्तान भी बनती है। यदि माता–पिता शिक्षित, सुसंस्कृत तथा बुद्धिमान हैं, तो सन्तानें भी सभ्य तथा सुसंस्कृत होंगी। यदि माता–पिता निरक्षर तथा दुराचारी हैं, तो उनकी सन्तानें भी मूर्ख और दुराचारी बनेंगी। इस प्रकार निष्कर्ष रूप में अवधारणा यह है कि जैसा बीज है, वैसा ही वृक्ष बनेगा उसे अच्छा बनाने के लिए प्रयास की आवश्यकता नहीं है। पुरानी कहावत भी है कि बोया पेड़ बबूल का तो आम कहाँ से आयेगा।

वुडवर्थ के अनुसार–

> आनुवंशिकता और वातावरण का सम्बन्ध जोड़ के समान नहीं बल्कि गुणनफल के समान है।

For Key/Answer of this file Send Your PINCODE to 9460443210 by whatsapp.

Get More Files for State TET and CTET Exam from 9460443210 by whatsapp.

गैरेट के अनुसार–

इससे अधिक निश्चित बात और कोई नहीं है कि आनुवंशिकता और वातावरण एक–दूसरे को सहयोग देने वाले प्रभाव हैं और दोनों ही बालक की सफलता के लिए अनिवार्य हैं।

4. गर्भकालीन प्रभावों के सम्बन्ध में

कुछ लोगों की यह अवधारणा होती है कि गर्भवती माँ की विभिन्न क्रियाएँ, जैसे– भोजन, परम्परागत उपचार, झाड़फूँक तथा सामाजिक रीति–रिवाज और परम्पराएँ गर्भस्थ शिशु के विकास को प्रभावित करती हैं। जैसे– कुछ लोग मानते हैं कि यदि खट्टा और चटपटा खाती है, तो बेटा होगा। इस अवधारणा से घर के सदस्य गर्भवती स्त्री की देखभाल करते हैं। प्रत्येक व्यक्ति अधिकांशतः पुत्र की ही कामना करता है। अतः वे उस स्त्री की अधिक देखभाल करते हैं, जिससे यह संकेत मिलते हैं कि पुत्र की प्राप्ति होगी। परिवार के सदस्यों के इस प्रकार के व्यवहार का प्रभाव गर्भवती की मानसिक दशा पर पड़ता है, जिससे गर्भस्थ शिशु का विकास प्रभावित होता है।

गर्भकालीन उपयुक्त व सन्तुलित भोजन, अच्छा साहित्य, अच्छा मनोरंजन, माँ की सुखदायक अनुभूतियाँ सभी कुछ गर्भस्थ शिशु के विकास के लिए सकारात्मक होता है, किन्तु इस बात में कोई तथ्य नहीं है कि गर्भधारण के बाद शिशु का लिंग परिवर्तित किया जा सकता है। शिशु जन्म एक अलौकिक प्रक्रिया है। बेटा और बेटी दोनों ही समान रूप से महत्त्वशाली और समान क्षमताओं से युक्त होते हैं। कॉट, डगलस, स्मिथ और बैगिन के शब्दों में–

इस संसार में पैदा होने वाला प्रत्येक बालक भगवान का एक नया विचार है तथा सदैव तरोताजा रहने तथा चमकने वाली सम्भावना है।

5. यौन भेद के सम्बन्ध में

आदिकाल से ही स्त्री को निर्बल और पुरूष को सबल माना जाता है। हमारे धार्मिक ग्रन्थ भी पुत्री की तुलना में पुत्र जन्म की श्रेष्ठता को इसलिए अधिक मानते हैं कि माता–पिता को मोक्ष की प्राप्ति करायेगा। हमारे धर्म और प्राचीन मान्यताओं के कारण ही बालिकाओं की तुलना में बालकों को अधिक महत्त्व दिया जाता है। कुछ स्थानों पर तो पुत्री के जन्म को अशुभ माना जाता है और जन्म के बाद उनको गला दबाकर मार दिया जाता है। जो माता–पिता बालक और बालिकाओं में भेद मानते हैं, वे बालकों को अधिक सुविधाएँ व लाड़–प्यार देते हैं और बालिकाओं को कम। माता–पिता की यह भावना बालिकाओं में हीन–भावना का विकास करती है और उनके विकास को अवरूद्ध करती है, किन्तु माता–पिता की यह भ्रान्ति बालक और बालिकाओं दोनों का समुचित विकास नहीं कर पाती है, क्योंकि अधिक लाड़–प्यार पाकर बालक अधिक उद्दण्ड हो जाता है। फ्रॉबेल

For Key/Answer of this file Send Your PINCODE to 9460443210 by whatsapp.

Get More Files for State TET and CTET Exam from 9460443210 by whatsapp.
का मानना है कि–

बालक स्वयं विकासोन्मुख होने वाला मानव पौधा है।

अतः बालकों के सर्वांगीण विकास के लिए यह आवश्यक है कि उनके पालन–पोषण में यौन विभेद न किया जाये।

1.10 बाल्यावस्था की विशेषताएँ

यद्यपि बाल्यावस्था को 6–12 वर्षायु तक माना जाता है। हरलॉक ने इसे 6 वर्ष से लेकर 12 वर्ष तक के बीच का समय माना है। इस अवस्था में बाल्यावस्था की प्रमुख विशेषताओं को निम्नांकित बिन्दुओं द्वारा व्यक्त किया जा सकता है–

1. शारीरिक व मानसिक स्थिरता

बालक के शारीरिक और मानसिक विकास में 6 या 7 वर्ष की आयु के बाद स्थिरता आ जाती है। वह स्थिरता उसकी शारीरिक व मानसिक शक्तियों को दृढ़ता प्रदान करती है। फलस्वरूप, उसका मस्तिष्क परिपक्व–सा और वह स्वयं वयस्क–सा जान पड़ता है, इसलिए रॉस ने बाल्यावस्था को **मिथ्या–परिपक्वता** का काल बताते हुए लिखा है–

शारीरिक और मानसिक स्थिरता बाल्यावस्था की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता है।

बाल्यावस्था के विकास का महत्त्व अत्यधिक है। इस अवस्था में विकास का अध्ययन अनेक महत्त्वपूर्ण तथ्यों को प्रकट करता है। कैरल के अनुसार–

बालक के शारीरिक विकास और उसके सामान्य व्यवहार का सह–सम्बन्ध इतना महत्त्वपूर्ण होता है कि यदि हम समझना चाहें कि भिन्न–भिन्न बालकों में क्या समानताएँ हैं, क्या भिन्नताएँ हैं, आयु–वृद्धि के साथ व्यक्ति में क्या–क्या परिवर्तन होते हैं, तो हमें बालकों के शारीरिक विकास का अध्ययन करना होगा।

2. मानसिक योग्यताओं में वृद्धि

बाल्यावस्था में बालक की मानसिक योग्यताओं में निरन्तर वृद्धि होती है। उसकी संवेदना और प्रत्यक्षीकरण की शक्तियों में वृद्धि होती है। वह विभिन्न बातों के बारे में तर्क और विचार करने लगता है। वह साधारण बातों पर अधिक देर तक अपने ध्यान को केन्द्रित कर सकता है। उसमें अपने पूर्व–अनुभवों को स्मरण कराने की योग्यता उत्पन्न हो जाती है।

3. जिज्ञासा की प्रबलता

बालक की जिज्ञासा विशेष रूप से प्रबल होती है। वह जिन वस्तुओं के सम्पर्क में आता है, उनके बारे में प्रश्न पूछकर हर तरह की जानकारी प्राप्त करना चाहता है। उसके ये प्रश्न

For Key/Answer of this file Send Your PINCODE to 9460443210 by whatsapp.

Get More Files for State TET and CTET Exam from 9460443210 by whatsapp.
शैशवावस्था के साधारण प्रश्नों से भिन्न होते हैं। अब वह शिशु के समान यह नहीं पूछता है– वह क्या है? इसके विपरीत, वह पूछता है– यह ऐसे क्यों है? यह ऐसे कैसे हुआ है?

4. वास्तविक जगत् से सम्बन्ध

इस अवस्था में बालक शैशवावस्था के काल्पनिक जगत् का परित्याग करके वास्तविक जगत् में प्रवेश करता है। वह उसकी प्रत्येक वस्तु से आकर्षित होकर उसका ज्ञान प्राप्त करना चाहता है। स्ट्रैंग के शब्दों में –

> बालक अपने को अति विशाल संसार में पाता है और उसके बारे में जल्दी से जल्दी जानकारी प्राप्त करना चाहता है।

5. रचनात्मक कार्यों में आनन्द

बालक को रचनात्मक कार्यों में विशेष आनन्द आता है। वह साधारणतः घर से बाहर किसी प्रकार का कार्य करना चाहता है, जैसे–बगीचे में काम करना या औजारों से लकड़ी की वस्तुएँ बनाना। उसके विपरीत, बालिका घर में ही कोई–न–कोई कार्य करना चाहती है, जैसे–सीना, पिरोना या कढ़ाई करना।

6. सामाजिक गुणों का विकास

बालक, विद्यालय के छात्रों और अपने समूह के सदस्यों के साथ पर्याप्त समय व्यतीत करता है। अतः उसमें अनेक सामाजिक गुणों का विकास होता है। जैसे– सहयोग, सदभावना, सहनशीलता, आज्ञाकारिता आदि।

7. नैतिक गुणों का विकास

इस अवस्था के आरम्भ में ही बालक में नैतिक गुणों का विकास होने लगता है। स्ट्रैंग के मतानुसार–

> 6, 7 और 8 वर्ष के बालकों में अच्छे–बुरे के ज्ञान का एवं न्यायपूर्ण व्यवहार, ईमानदारी और सामाजिक मूल्यों की भावना का विकास होने लगता है।

8. बहिर्मुखी व्यक्तित्व का विकास

शैशवावस्था में बालक का व्यक्तित्व अन्तर्मुखी होता है, क्योंकि वह एकान्तप्रिय और केवल अपने में रूचि लेने वाला होता है। इसके विपरीत, बाल्यावस्था में उसका व्यक्तित्व बहिर्मुखी हो जाता है, क्योंकि बाह्य जगत् में उसकी रूचि उत्पन्न हो जाती है। अतः वह अन्य व्यक्तियों, वस्तुओं और कार्यों का अधिक से अधिक परिचय प्राप्त करना चाहता है।

9. संवेगों का दमन व प्रदर्शन

बालक अपने संवेगों पर अधिकार रखना एवं अच्छी और बुरी भावनाओं में अन्तर करना जान जाता है। वह उन भावनाओं का दमन करता है, जिनको उसके माता–पिता और बड़े लोग पसन्द नहीं करते हैं, जैसे– काम सम्बन्धी भावनाएँ।

For Key/Answer of this file Send Your PINCODE to 9460443210 by whatsapp.

Get More Files for State TET and CTET Exam from 9460443210 by whatsapp.

10. संग्रह करने की प्रवृत्ति

बाल्यावस्था में बालकों और बालिकाओं में संग्रह करने की प्रवृत्ति बहुत ज्यादा पायी जाती है। बालक विशेष रूप से काँच की गोलियों, टिकटों, मशीनों के भागों और पत्थर के टुकड़ों का संचय करते हैं। बालिकाओं में चित्रों, खिलौनों और कपड़ों के टुकड़ों का संग्रह करने की प्रवृत्ति पाई जाती है।

11. निरूद्देश्य भ्रमण की प्रवृत्ति

बालक में बिना किसी उद्देश्य के इधर–उधर घूमने की प्रवृत्ति बहुत अधिक होती है। मनोवैज्ञानिक बर्ट ने अपने अध्ययनों के आधार पर बताया है कि लगभग 9 वर्ष के बालकों में आवारा घूमने, बिना छुट्टी लिए विद्यालय से भागने और आलस्यपूर्ण जीवन व्यतीत करने की आदतें सामान्य रूप से पाई जाती है।

12. काम–प्रवृत्ति की न्यूनता

बालक में काम–प्रवृत्ति की न्यूनता होती है। वह अपना अधिकांश समय मिलने–जुलने, खेलने–कूदने और पढ़ने–लिखने में व्यतीत करता है। अतः वह बहुत ही कम अवसरों पर अपनी काम–प्रवृत्ति का प्रदर्शन कर पाता है।

13. सामूहिक प्रवृत्ति की प्रबलता

बालक में सामूहिक प्रवृत्ति बहुत प्रबल होती है। वह अपना अधिक से अधिक समय दूसरे बालकों के साथ व्यतीत करने का प्रयास करता है। रॉस के अनुसार–

> बालक प्रायः अनिवार्य रूप से किसी न किसी समूह का सदस्य हो जाता है, जो अच्छे खेल खेलने और ऐसे कार्य करने के लिए नियमित रूप से एकत्र होता है, जिनके बारे में बड़ी आयु के लोगों को कुछ भी नहीं बताया जाता है।

14. सामूहिक खेलों में रूचि

बालक को सामूहिक खेलों में अत्यधिक रूचि होती है। वह 6 या 7 वर्ष की आयु में छोटे समूहों में और काफी समय तक खेलता है। खेल के समय बालिकाओं की अपेक्षा बालकों में झगड़े अधिक होते हैं। 11 या 12 वर्ष की आयु में बालक दलीय खेलों में भाग लेने लगता है। स्ट्रैंग का विचार है–

> ऐसा शायद ही कोई खेल हो, जिसे दस वर्ष के बालक न खेलते हों।

15. रूचियों में परिवर्तन

बालक की रूचियों में निरन्तर परिवर्तन होता रहता है। वे स्थायी रूप धारण न करके वातावरण में परिवर्तन के साथ परिवर्तित होती रहती हैं। कोल एवं ब्रूस ने लिखा है–

> 6 से 12 वर्ष की अवधि की एक अपूर्व विशेषता है–मानसिक रूचियों में स्पष्ट परिवर्तन।

For Key/Answer of this file Send Your PINCODE to 9460443210 by whatsapp.

Get More Files for State TET and CTET Exam from 9460443210 by whatsapp.

1.11 बाल्यावस्था में शिक्षा का स्वरूप

बाल्यकाल बालक के जीवन की आधारशिला है। अतः यह आवश्यक है कि बालक के विकास के सभी पक्षों की विशेषताओं को ध्यान में रखते हुये शिक्षा का स्वरूप निर्धारित किया जाये। अतः उसकी शिक्षा के स्वरूप को निर्धारित करते समय निम्न बातों पर ध्यान देना चाहिए–

1. भाषा के ज्ञान पर बल

स्ट्रैंग के अनुसार इस अवस्था में बालकों की भाषा में बहुत रूचि होती है। अतः इस बात पर बल दिया जाना आवश्यक है कि बालक, भाषा का अधिक–से–अधिक ज्ञान प्राप्त करे।

2. उपयुक्त विषयों का चुनाव

बालक के लिए कुछ ऐसे विषयों का अध्ययन आवश्यक है, जो उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकें और उसके लिए लाभप्रद भी हों। इस विचार से निम्नलिखित विषयों का चुनाव किया जाना चाहिए–भाषा, अंकगणित, विज्ञान, सामाजिक अध्ययन, चित्रकला, सुलेख, पत्र–लेखन और निबन्ध–रचना।

3. रोचक विषय–सामग्री

बालकों की रूचियों में विभिन्नता और परिवर्तनशीलता होती है, अतः उसकी पुस्तकों की विषय–सामग्री में रोचकता और विभिन्नता होनी चाहिए। इस दृष्टिकोण से विषय–सामग्री का सम्बन्ध निम्नलिखित से होना चाहिए–पशु, हास्य, विनोद, नाटक, वार्तालाप, वीर पुरूष, साहसी कार्य और आश्चर्यजनक बातें।

4. पाठ्य–विषय व शिक्षण–विधि में परिवर्तन

इस अवस्था में बालक की रूचियों में निरन्तर परिवर्तन होता रहता है। अतः पाठ्य–विषय और शिक्षण–विधि में उसकी रूचियों के अनुसार परिवर्तन किया जाना आवश्यक है। ऐसा न करने से उसमें शिक्षा के प्रति कोई आकर्षण नहीं रह जाता है। फलस्वरूप, उसकी मानसिक प्रगति रूक जाती है।

5. जिज्ञासा की सन्तुष्टि

बालक में जिज्ञासा की प्रवृत्ति होती है। अतः उसे दी जाने वाली शिक्षा का स्वरूप ऐसा होना चाहिए, जिससे उसकी इस प्रवृत्ति की तुष्टि हो।

6. सामूहिक प्रवृत्ति की तुष्टि

बालक में समूह में रहने की प्रबल प्रवृत्ति होती है। वह अन्य बालकों से मिलना–जुलना और उनके साथ कार्य करना या खेलना चाहता है। उसे इन सब बातों का अवसर देने के लिए विद्यालय में सामूहिक कार्यों और सामूहिक खेलों का उचित आयोजन किया जाना

For Key/Answer of this file Send Your PINCODE to 9460443210 by whatsapp.

Get More Files for State TET and CTET Exam from 9460443210 by whatsapp.
चाहिए। कोलेसनिक के अनुसार–

सामूहिक खेल और शारीरिक व्यायाम–प्राथमिक विद्यालय के पाठ्यक्रम के अभिन्न अंग होने चाहिए।

7. रचनात्मक कार्यों की व्यवस्था

बालक की रचनात्मक कार्यों में विशेष रूचि होती है। अतः विद्यालय में विभिन्न प्रकार के रचनात्मक कार्यों की व्यवस्था की जानी चाहिए।

8. पाठ्यक्रम–सहगामी क्रियाओं की व्यवस्था

बालक की विभिन्न मानसिक रूचियों को सन्तुष्ट करके उसकी सुप्त शक्तियों का अधिकतम विकास किया जा सकता है। इस कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए विद्यालय में अधिक–से–अधिक पाठ्यक्रम–सहगामी क्रियाओं का संचालन किया जाना चाहिए।

9. पर्यटन व स्काउटिंग की व्यवस्था

लगभग 9 वर्ष की आयु में बालक में निरूद्देश्य इधर–उधर घूमने की प्रवृत्ति होती है। उसकी इस प्रवृत्ति को सन्तुष्ट करने के लिए पर्यटन और स्काउटिंग को उसकी शिक्षा का अभिन्न अंग बनाया जाना चाहिए।

10. संचय–प्रवृत्ति को प्रोत्साहन

बालक में संचय करने की प्रवृत्ति होती है। उसे जो भी वस्तु अच्छी लगती है, उसी का वह संचय कर लेता है। उसके माता–पिता और शिक्षक का कर्त्तव्य है कि वे उसे शिक्षाप्रद वस्तुओं का संचय करने के लिए प्रोत्साहित करें।

11. संवेगों के प्रदर्शन का अवसर

कोल एवं ब्रूस ने बाल्यावस्था को **संवेगात्मक विकास का अनोखा काल** माना है। यह विकास तभी सम्भव है, जब बालक के संवेगों का दमन न किया जाय, क्योंकि ऐसा करने से उसमें भावना–ग्रन्थियों का निर्माण हो जाता है। अतः स्ट्रैंग का परामर्श है–

बालकों को सामाजिक स्वीकृति–प्राप्त अपने संवेगों का दमन करने के बजाय तृप्त करने में सहायता दी जानी चाहिए, क्योंकि संवेगात्मक भावना और प्रदर्शन उनके सम्पूर्ण जीवन का आधार होता है।

12. सामाजिक गुणों का विकास

किलपैट्रिक ने बाल्यावस्था को **प्रतिद्वन्द्वात्मक समाजीकरण का काल** माना है। अतः विद्यालय में ऐसी क्रियाओं का अनिवार्य रूप से संगठन किया जाना चाहिए, जिनमें भाग लेकर बालक में अनुशासन, आत्म–नियन्त्रण, सहानुभूति, प्रतिस्पर्धा, सहयोग आदि सामाजिक गुणों का अधिकतम विकास हो।

For Key/Answer of this file Send Your PINCODE to 9460443210 by whatsapp.

Get More Files for State TET and CTET Exam from 9460443210 by whatsapp.

13. नैतिक शिक्षा

पियाजे ने अपने अध्ययनों के आधार पर बताया है कि लगभग 8 वर्ष का बालक अपने नैतिक मूल्यों का निर्माण और समाज के नैतिक नियमों में विश्वास करने लगता है। उसे इन मूल्यों का उचित निर्माण और इन नियमों में दृढ़ विश्वास रखने के लिए नियमित रूप से नैतिक शिक्षा दी जानी चाहिए। कोलेसनिक का मत है– बालक को आनन्द प्रदान करने वाली सरल कहानियों द्वारा नैतिक शिक्षा दी जानी चाहिए।

14. क्रिया व खेल द्वारा शिक्षा

सभी शिक्षा–शास्त्री बालक की स्वाभाविक क्रियाशीलता और खेल–प्रवृत्ति में विश्वास करते हैं। अतः उसकी शिक्षा का स्वरूप ऐसा होना चाहिए, जिससे वह स्वयं–क्रिया और खेल द्वारा ज्ञान का अर्जन करे।

15. प्रेम व सहानुभूति पर आधारित शिक्षा

बालक कठोर अनुशासन पसन्द नहीं करता है। वह शारीरिक दण्ड, बल–प्रयोग और डाँट–डपट से घृणा करता है। वह उपदेश नहीं सुनना चाहता है। वह धमकियों की चिन्ता नहीं करता है। अतः उसकी शिक्षा इनमें से किसी पर आधारित न होकर प्रेम और सहानुभूति पर आधारित होनी चाहिए।

फ्रायड और उसके अनुयायियों ने बाल्यावस्था को बालक का निर्माणकारी काल मानकर इस अवस्था को अत्यधिक महत्त्व दिया है। उनका कहना है कि इस अवस्था में बालक जिन वैयक्तिक, सामाजिक और शिक्षा–सम्बन्धी आदतों एवं व्यवहार के प्रतिमानों का निर्माण कर लेता है, उनको रूपान्तरित करना बहुत कठिन हो जाता है। इस दृष्टि से प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने वाले शिक्षकों पर बालकों का निर्माण करने का महान् उत्तरदायित्व है। लगभग ऐसे ही विचारों को व्यक्त करते हुए ब्लेयर, जोन्स तथा सिम्पसन ने लिखा है–

> शैक्षिक दृष्टिकोण से जीवन–चक्र में बाल्यावस्था से अधिक महत्त्वपूर्ण और कोई अवस्था नहीं है। जो अध्यापक इस अवस्था के बालकों को शिक्षा देते हैं, उन्हें बालकों का, उनकी आधारभूत आवश्यकताओं का, उनकी समस्याओं का और उन परिस्थितियों का पूर्व ज्ञान होना चाहिए, जो उनके व्यवहार को रूपान्तरित और परिवर्तित करती हैं।

मनोवैज्ञानिक, बाल्यावस्था को शैक्षिक दृष्टिकोण से विशेष महत्त्व देते हैं। इस अवस्था में शिक्षा का यथार्थवादी स्वरूप, जो उनकी आवश्यकता, प्रकृति तथा मूल प्रवृत्तियों के शोधन पर आधारित हो, वह बालकों के मूलभूत गुणों को विकसित करने तथा उन्हें स्वस्थ, सजग नागरिक बनाने की दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है।

For Key/Answer of this file Send Your PINCODE to 9460443210 by whatsapp.

Get More Files for State TET and CTET Exam from 9460443210 by whatsapp.

****

For Key/Answer of this file Send Your PINCODE to 9460443210 by whatsapp.

Get More Files for State TET and CTET Exam from 9460443210 by whatsapp.

अभ्यासार्थ प्रश्न

1. बाल विकास का अर्थ है–
   (1) व्यवहार में परिवर्तन
   (2) बालक का गुणात्मक व परिमाणात्मक परिवर्तन
   (3) बालक का गुणात्मक विकास
   (4) व्यक्तित्व में परिवर्तन

2. बाल विकास की प्रकृति कैसी मानी जाती है?
   (1) विज्ञानमयी (2) अप्राकृतिक
   (3) अनिश्चित (4) अवैज्ञानिक

3. बाल अध्ययन का पिता कौन है?
   (1) फ्रायड (2) ड्रेवर
   (3) स्टेनले हॉल (4) डार्विन

4. बाल विकास की उपयोगिता है–
   (1) बाल निर्देशन में (2) बालकों के स्वभाव को समझने में
   (3) बालकों के शिक्षण में (4) उपर्युक्त सभी

5. पूर्व बाल्यावस्था की विशेषता क्या है?
   (1) जिज्ञासा (2) खिलौनों में रुचि
   (3) नवीन पद्धतियाँ (4) उपर्युक्त सभी

6. उत्तर बाल्यावस्था की विशेषता है–
   (1) आत्मनिर्भर होना (2) मित्र मण्डली या समूह निर्माण
   (3) स्वतन्त्र होना (4) उपर्युक्त सभी

7. बाल विकास कब सम्पन्न होता है?
   (1) बाल्यावस्था में (2) शैशवावस्था में
   (3) जीवनपर्यन्त चलता है। (4) किशोरावस्था में

For Key/Answer of this file Send Your PINCODE to 9460443210 by whatsapp.

Get More Files for State TET and CTET Exam from 9460443210 by whatsapp.

8. बाल विकास को कितने भागों में बाँटा गया है–
(1) 2 (2) 5
(3) 4 (4) 3

9. शैक्षिक दृष्टि से बाल विकास की अवस्थाएँ हैं–
(1) किशोरावस्था (2) बाल्यावस्था
(3) शैशवावस्था (4) उपरोक्त तीनों

10. बाल विकास को सर्वाधिक प्रभावित करने वाला कारक है–
(1) यौन शिक्षा (2) बुद्धि परीक्षण
(3) खेलकूद का मैदान (4) सुन्दर विद्यालय भवन

11. बाल विकास में–
(1) गर्भावस्था से किशोरावस्था तक का अध्ययन होता है।
(2) प्रक्रिया पर बल दिया गया है।
(3) वातावरण और अनुभव की भूमिका पर बल दिया गया है।
(4) उपर्युक्त सभी पर

12. बाल विकास का अध्ययन क्षेत्र है–
(1) वैयक्तिक विभिन्नताओं का अध्ययन
(2) बाल विकास की विभिन्न अवस्थाओं का अध्ययन
(3) वातावरण के बाल विकास पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन
(4) उपर्युक्त सभी

13. विकास शुरू होता है–
(1) उत्तर–बाल्यावस्था से (2) प्रसवपूर्व अवस्था से
(3) शैशवावस्था से (4) पूर्व–बाल्यावस्था से

14. **विकासात्मक बाल मनोविज्ञान** का जनक किसे माना जाता है?
(1) फ्रायड को (2) ब्रूनर को
(3) जीन पियाजे को (4) केली को

15. **खिलौनों की आयु** कहा जाता है–
(1) पूर्व बाल्यावस्था को (2) उत्तर बाल्यावस्था को
(3) शैशवावस्था को (4) इनमें से सभी

For Key/Answer of this file Send Your PINCODE to 9460443210 by whatsapp.

Get More Files for State TET and CTET Exam from 9460443210 by whatsapp.

16. बाल मनोविज्ञान के अनुसार शिक्षा के क्षेत्र में मुख्य स्थान है–
(1) बालक का (2) प्रशासक का
(3) अध्यापक का (4) अभिभावक का

17. शैशवावस्था में शिशु होता है–
(1) सामाजिक (2) आत्मकेन्द्रित
(3) संवेगात्मक दृष्टि से दृढ़ (4) संवेगात्मक रूप से अस्थिर

18. निम्न में से कौनसी पूर्व बाल्यावस्था की विशेषता नहीं है?
(1) दल/समूह में रहने की अवस्था (2) अनुकरण करने की अवस्था
(3) प्रश्न करने की अवस्था (4) खेलने की अवस्था

19. उत्तर बाल्यावस्था में बालक भौतिक वस्तुओं के किस आवश्यक तत्त्व में परिवर्तन समझने लगते हैं?
(1) द्रव्यमान (2) द्रव्यमान और संख्या
(3) संख्या (4) द्रव्यमान, संख्या और क्षेत्र

20. निम्न में से कौनसा विकासात्मक कार्य उत्तर बाल्यावस्था के उपयुक्त नहीं है?
(1) सामान्य खेल के लिए आवश्यक शारीरिक कुशलताएँ सीखना
(2) पुरूषोचित या स्त्रियोचित सामाजिक भूमिकाओं को प्राप्त करना
(3) वैयक्तिक आत्मनिर्भरता प्राप्त करना
(4) अपने हमउम्र बालकों के साथ रहना सीखना

21. बाल विकास के अध्ययन में निम्नलिखित में से किन बातों को शामिल किया जाता है?
1. आयु के साथ होने वाले परिवर्तनों का क्या स्वरूप होता है?
2. बालक में होने वाले परिवर्तनों का विशेष आयु के साथ क्या सम्बन्ध होता है?
3. बालकों में पाई जाने वाली व्यक्तिगत विभिन्नताओं के लिए किस प्रकार के आनुवंशिक एवं परिवेशजन्य प्रभाव उत्तरदायी होते हैं?
(1) 1 एवं 2 (2) 2 एवं 3
(3) 1 एवं 3 (4) ये सभी

For Key/Answer of this file Send Your PINCODE to 9460443210 by whatsapp.

Get More Files for State TET and CTET Exam from 9460443210 by whatsapp.

22. विकास की प्रक्रिया में ..... जीवनमूल्यों, व्यक्तित्व, व्यवहार इत्यादि का विकास भी शामिल है।

1 दृष्टिकोणों 2. स्वभाव
3. रूचियों 4. आदतों
(1) 1 एवं 2 (2) 1,2 एवं 3
(3) 2,3 एवं 4 (4) ये सभी

23. शिक्षा मनोविज्ञान में ..... में होने वाले मानव विकास का अध्ययन किया जाता है।

1. शैशवावस्था 2. बाल्यावस्था
3. किशोरावस्था 4. वयस्कावस्था
(1) 1 एवं 2 (2) 1,2 एवं 3
(3) 1 एवं 3 (4) ये सभी

24. 6–11 वर्ष के आयु वर्ग के बालकों की विशेषता हैं–
(1) बालक स्वाभाविक एवं सक्रिय अधिगमकर्ता होते हैं।
(2) सीखने के लिए शिक्षकों पर निर्भर होते हैं।
(3) बालक, शिक्षकों से ज्ञान प्राप्त करते हैं।
(4) बालक सीखने में रूचि नहीं रखते हैं।

25. 6 या 7 वर्ष का बालक दूसरों के विचारों को स्वीकार करने के योग्य नहीं होता–
(1) क्योंकि वह बहुत छोटा होता है। (2) क्योंकि वह अहम् केन्द्रित होता है।
(3) क्योंकि वह कल्पनाशील होता है। (4) क्योंकि वह बुद्धिमान नहीं होता है।

26. निम्न में से किसकी भूमिका पूर्व बाल्यावस्था में बालक के संवेगात्मक विकास हेतु सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है?
(1) अध्यापकों की (2) संगी–साथियों की
(3) पड़ोसियों की (4) माता–पिता की

27. अधिकांश विद्वानों के अनुसार बाल्यावस्था की अवधि है–
(1) 5 से 10 वर्ष (2) 6 से 12 वर्ष
(3) 4 से 10 वर्ष (4) 2 से 8 वर्ष

For Key/Answer of this file Send Your PINCODE to 9460443210 by whatsapp.

Get More Files for State TET and CTET Exam from 9460443210 by whatsapp.

28. कॉल व ब्रूस ने बाल्यावस्था को माना है–
(1) समस्यात्मक काल (2) अनोखा काल
(3) मिथ्या परिपक्वता काल (4) जिज्ञासा काल

29. बाल्यावस्था को **मिथ्या परिपक्वता काल** कहा है–
(1) रॉस ने (2) कॉल व ब्रूस ने
(3) एना फ्रायड ने (4) क्रो एवं क्रो ने

30. बाल्यावस्था में पायी जाने वाली प्रवृत्ति/प्रवृत्तियाँ है/हैं–
(1) निरूद्देश्य भ्रमण की प्रवृत्ति (2) जिज्ञासा की प्रबलता
(3) रचनात्मक कार्यों में आनन्द लेना (4) उपरोक्त सभी

31. **समूह अवस्था** या **चुस्ती की अवस्था** भी कहते हैं–
(1) शैशवावस्था को (2) बाल्यावस्था को
(3) प्रौढ़ावस्था को (4) किशोरावस्था को

32. बाल्यावस्था को निम्नलिखित में से किस नाम से जाना जाता है?
(1) टोली आयु (2) जीवन का अनोखा काल
(3) बक्की अवस्था (4) उपरोक्त सभी

33. परिपक्व बाल्यावस्था किसे कहते हैं?
(1) 6 से 9 वर्ष (2) 7 से 10 वर्ष
(3) 8 से 11 वर्ष (4) 9 से 12 वर्ष

34. बाल्यावस्था में कौनसी मूलप्रवृत्ति सबसे अधिक क्रियाशील रहती है?
(1) काम (2) जिज्ञासा
(3) रचनात्मकता (4) सामूहिकता

35. बाल्यावस्था में **परिपाक काल** की निम्न में से कौनसी अवधि है?
(1) 12 से लेकर 14 वर्ष (2) 14 से लेकर 16 वर्ष
(3) 10 से लेकर 12 वर्ष (4) उपर्युक्त में से कोई नहीं

For Key/Answer of this file Send Your PINCODE to 9460443210 by whatsapp.

Get More Files for State TET and CTET Exam from 9460443210 by whatsapp.

36. बाल्यावस्था में बालकों को साहसिक यात्राओं की रोमांचकारी कहानियाँ सुनाने सें उनमें–
(1) आज्ञा एवं अनुशासन के गुण उत्पन्न होते हैं।
(2) भय के संवेग समाप्त होते हैं।
(3) उत्साह का संचार होता है।
(4) आनन्द की भावना विकसित होती है।

37. बाल्यावस्था की एक प्रमुख विशेषता है–
(1) अधिगम की तीव्रता (2) अपेक्षाकृत स्थिर विकास प्रक्रिया
(3) यथार्थवादी दृष्टिकोण (4) उपर्युक्त सभी

38. शिक्षक बाल मनोविज्ञान के ज्ञान द्वारा बालकों की–
1. बुद्धि तथा रूचियों की जानकारी लेकर शिक्षा देता है।
2. प्रकृति को जानकर शिक्षा देता है।
3. आर्थिक स्थिति तथा पारिवारिक स्थिति की जानकारी लेकर शिक्षा देता है।
(1) केवल 1 (2) 1 एवं 3
(3) 2 एवं 3 (4) ये सभी

39. बाल मनोविज्ञान का अध्ययन निम्नलिखित में से किसके लिए सर्वाधिक आवश्यक है?
(1) माध्यमिक शिक्षक के लिए (2) विश्वविद्यालय के शिक्षक के लिए
(3) प्राथमिक शिक्षक के लिए (4) उपरोक्त सभी के लिए

40. निम्नलिखित में से किसे बाल मनोविज्ञान की उपयोगिता के अन्तर्गत नहीं रखा जा सकता है?
(1) बालक के भविष्य के बारे में पूर्वकथन में सहायक
(2) बाल निर्देशन में सहायक
(3) शिक्षक की आर्थिक प्रगति में सहायक
(4) बालकों के व्यक्तिगत विकास को समझने में उपयोगी

41. प्राथमिक शिक्षण के लिए बाल मनोविज्ञान का ज्ञान आवश्यक है, क्योंकि–
(1) यह बच्चों को अनुशासित बनाने में सहायक है।
(2) परीक्षा के परिणाम में उन्नति होती है।
(3) यह बच्चों को अभिप्रेरित करने के लिए सुविधाजनक तरीका बन जाता है।
(4) यह बच्चों के व्यवहार को समझने में शिक्षक की सहायता करता है।

For Key/Answer of this file Send Your PINCODE to 9460443210 by whatsapp.

Get More Files for State TET and CTET Exam from 9460443210 by whatsapp.

42. बाल्यावस्था में विकास को **छद्म परिपक्वता का समय** किसने कहा है?
(1) रॉस ने (2) जेम्स ट्रेवर ने
(3) जीन पियाजे ने (4) एन.आर.भाटिया ने

43. प्राथमिक कक्षा के शिक्षक के लिए निम्नलिखित में से किसका ज्ञान होना आवश्यक है?
(1) बाल मनोविज्ञान (2) शिक्षा–दर्शन
(3) स्वास्थ्य विज्ञान (4) सामाजिक विज्ञान

44. बालकों के स्वभाव को समझने के लिए शिक्षकों को निम्नलिखित में से किसका अध्ययन करना चाहिए?
(1) सामाजिक विज्ञान (2) प्राकृतिक विज्ञान
(3) बाल मनोविज्ञान (4) भूगोल

45. शिक्षक के लिए मनोविज्ञान/बाल मनोविज्ञान का ज्ञान क्यों जरूरी है?
(1) इसमें बच्चों की आधारभूत विशेषताओं को जानने का अवसर मिलता है।
(2) शिक्षण मनोवैज्ञानिक नियमों के अनुकूल होता है।
(3) आधुनिक शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता है।
(4) शिक्षण सफल होता है।

46. बाल मनोविज्ञान किसके व्यवहार का वैज्ञानिक अध्ययन है?
(1) बालक (2) शिक्षक
(3) किशोर (4) उपर्युक्त में से कोई नहीं

47. **बाल मनोविज्ञान एक वैज्ञानिक अध्ययन है, जिसमें बालक के जन्म पूर्व काल से लेकर किशोरावस्था तक का अध्ययन किया जाता है।** यह कथन है–
(1) हरलॉक का (2) थॉमसन का
(3) क्रो एवं क्रो का (4) रॉस का

48. **Biographical Sketch of a infant** नामक पुस्तक का प्रकाशन किसने किया?
(1) डार्विन ने (2) प्लेटो ने
(3) रूसो ने (4) विलियम हिली ने

For Key/Answer of this file Send Your PINCODE to 9460443210 by whatsapp.

Get More Files for State TET and CTET Exam from 9460443210 by whatsapp.

49. प्रथम बाल निर्देशन केन्द्र किसके द्वारा खोला गया?
(1) प्लेटो (2) विलियम हिली
(3) डार्विन (4) रूसो

50. **बाल मनोविज्ञान वह वैज्ञानिक अध्ययन है, जो व्यक्ति के विकास का अध्ययन गर्भकाल के प्रारम्भ से किशोरावस्था की प्रारम्भावस्था तक करता है।** यह परिभाषा किसने दी?
(1) क्रो एवं क्रो ने (2) वर्क ने
(3) जेम्स ड्रेवर ने (4) आरजेंक ने

51. **बाल मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है, जिसमें जन्म से परिपक्व अवस्था तक विकसित हो रहे मानव का अध्ययन किया जाता है।** यह परिभाषा किसने दी?
(1) रूसो ने (2) आइजेंक ने
(3) ड्रेवर ने (4) कैटल ने

52. बाल विकास की परिभाषा का अध्ययन क्षेत्र है–
(1) बच्चों की वयस्क तथा वरिष्ठ नागरिकों के साथ तुलना करेगा।
(2) मानवीय सामर्थ्यों में परिवर्तन की व्याख्या करता है।
(3) जीवन अवधि के दौरान व्यवहार की व्याख्या ढूँढेगा।
(4) किसी बच्चे के संज्ञानात्मक, सामाजिक तथा दूसरे सामर्थ्यों के क्रमिक विकास के लिए उत्तरदायी रहेगा।

53. बाल्यावस्था को **प्रतिद्वन्द्वात्मक समाजीकरण** की अवस्था किसने कहा है?
(1) फ्रॉबेल ने (2) स्टेनले हॉल ने
(3) जरशील्ड ने (4) किलपैट्रिक ने

54. बाल विकास की सम्पूर्ण अवधि में मानसिक विकास की गति सर्वाधिक तीव्र किस अवस्था में होती है?
(1) शैशवावस्था में (2) किशोरावस्था में
(3) बाल्यावस्था में (4) प्रौढ़ावस्था में

55. जीन पियाजे का बाल विकास वर्गीकरण किस सिद्धान्त पर आधारित है?
(1) मनो सामाजिक विकास सिद्धान्त (2) नैतिक विकास सिद्धान्त
(3) मनोलैंगिक विकास सिद्धान्त (4) संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त

For Key/Answer of this file Send Your PINCODE to 9460443210 by whatsapp.

Get More Files for State TET and CTET Exam from 9460443210 by whatsapp.

56. बाल विकास के शैक्षिक निहितार्थ से सम्बन्धित नहीं है–
(1) विद्यालय के बाग की देखभाल करना
(2) विद्यालय तथा समुदाय को जोड़ना
(3) प्रातःकालीन विद्यालयी सभाओं को सम्बोधित करना
(4) पिछड़े और गन्दे क्षेत्रों में लोगों की सेवा के लिए न जाना

57. निम्न में से कौनसा सिद्धान्त बाल विकास में वातावरण सम्बन्धी कारकों को ही महत्त्व देता है?
(1) परस्पर सम्बन्ध का सिद्धान्त
(2) सामाजिक अधिगम सिद्धान्त
(3) विकास क्रम की एकरूपता का सिद्धान्त
(4) निरन्तरता का सिद्धान्त

58. **एक बालक पहले पूरे हाथ को, फिर अंगुलियों को और फिर हाथ और अंगुलियों को एक साथ चलाना सीखता है।** बाल विकास के सम्बन्ध में यह सिद्धान्त कहलाता है–
(1) सामाजिक अधिगम सिद्धान्त (2) परस्पर सम्बन्ध का सिद्धान्त
(3) एकीकरण का सिद्धान्त (4) इनमें से कोई नहीं

****

For Key/Answer of this file Send Your PINCODE to 9460443210 by whatsapp.